❶

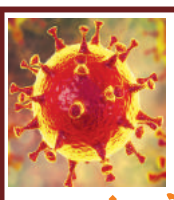

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

कोरोना वायरस संक्रमण
सतर्क रहें - सुरक्षित रहें
सरकार के निर्देशों का पालन करें
स्वयं बचें - परिवार बचाएं- देश बचाएं

वर्ष 43, अंक 27 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 1 जून, 2020 से रविवार 7 जून, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

कोरोना काल में वैदिक सिद्धांतों की और लौटता हुआ भारत और विश्व

.....संसार में एक तिनका भी बिना प्रयोजन के लिए नहीं उगता, इस पृथ्वी ग्रह पर हर जीव का अपना अस्तित्व है।सांप और बिच्छु भी हवाओं में से विषैला तत्व खींचकर मनुष्य का उपकार करते हैं,मछली जल में रहकर जल का शोधन करती हैं, मुर्गे-मुर्गियां भी गंदे कीटाणुओं को खाकर स्वछता में सहयोगी होते हैं। ये सारी भोग योनियां अपने-अपने कर्मों के अनुसार भोग भोगने के लिए परतंत्र हैं, लेकिन मनुष्य इन्हें अपना आहार बनाने का जो पाप करता है उसका दंड़ तो प्रकृति अवश्य देती है। मनुष्य कर्म करने में पूर्ण स्वतंत्र है, लेकिन कर्मफल तो ईश्वर के अधीन है। ......आज पूरे भारत और विश्व के लोग चाहे कोरोना के डर के कारण ही सही आर्य समाज के शाकाहार संबंधी विचारों को चाहे कम संख्या में ही सही लेकिन मानने लगी है। मांसाहार को त्यागने लगे हैं। अपने परिवार और बच्चों को भी यह कहने लगा है कि अगर जीना है तो मांसाहार छोड़ना ही होगा। इस महत्वपूर्ण विषय पर लोग जागरुक हो रहे हैं। ......

आर्य समाज के सिद्धांत और मान्यताओं का आधार वेद है। महर्षि दयानंद सरस्वती का वह उदघोष आओ लौट चलें वेदों की ओर आर्य समाज का प्रमुख नारा है। इसीलिए आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की धुरी **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** की कल्याणकारी भावना और कामना, सारे विश्व को आर्य बनाओ की है। आर्य समाज के महान विद्वानों के अनुसार यह भी अटल सत्य प्रतीत हो रहा है कि आज नही तो चाहे आने वाले हजारों सालों में ही सही मानव समाज में अगर सुख- शांति, प्रेम-सौहार्द और कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा तो आर्य समाज के वैदिक सिद्धांतों पर चलने से ही संभव होगा। क्योंकि वेदों का ज्ञान ही मानव को सन्मार्ग दिखाने में सक्षम है। आज जब पूरा विश्व कोरोना की महामारी से जूझ रहा है, लाखों लोग इस लाइलाज बीमारी के कारण काल के गाल में समा गए हैं और आधा करोड से ज्यादा लोग मौत और जीवन के बीच संघर्षरत हैं, चारों तरफ हाहाकार मचा हुआ है, एक अदृश्य विषाणु परमाणु से भी ज्यादा असरदार, प्राण घातक सिद्ध हो रहा है। ऐसे घोर संकट काल में आहार, स्वदेशी, आचरण, व्यवहार, औषध, उपचार, उत्थान और मानव कल्याण के समस्त आयास-प्रयास आर्य समाज के सिद्धांतों और मान्यताओं के अनुकूल ही किए जा रहे हैं।

शाकाहार और आर्य समाज

यह एक प्रसिद्ध कहावत है कि जैसा खाएंगे अन्न, वैसा होगा मन, जैसा पीएंगे पानी वैसी होगी वाणी। आज पूरे भारत और विश्व के मनुष्यों का आहार अत्यंत दूषित हो गया है। और कोरोना वायरस की जड़ भी गलत आहार को ही माना जा रहा है। परमात्मा ने मनुष्य के लिए इतने सारे शाकाहारी खाद्य पदार्थ बनाए हैं कि

- शेष पृष्ठ 5 पर

डिजिटल शिक्षा व्यवस्था-एक बड़ी चुनौति

......लाकडाउन काल में शिक्षा का डिजिटलीकरण एक नए रंग रूप में सामने आया है। इसके बढ़ते महत्व को लेकर मानव समाज में खासी चर्चा और चिंता व्याप्त है। क्योंकि हमारे देश में आज भी एक बड़ी आबादी के पास न तो स्मार्ट फोन है, न ही कंप्यूटर और न ही इंटरनेट की व्यवस्था है। ऐसे में अभिभावकों को अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिए उन्हें ये सारी सुविधाएं उपलब्ध कराने का अतिरिक्त दबाव सहन करना ही होगा। जो गरीब लोग इस मामले में पहले ही अपने आपको पिछड़ा हुआ महसूस कर रहे थे, वे अब और ज्यादा आत्मग्लानि के शिकार होंगे।..........

मानव निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षा का अपना महत्व है। आज कोरोना वायरस ने शिक्षा व्यवस्था का चेहरा ही बदल कर रख दिया है। मानव समाज में स्वास्थ्य रक्षा को लेकर तो काफी चिंता और चर्चा दिखाई सुनाई दे रही है। लेकिन कोरोना के कारण शिक्षा की बदहाली पर विमर्श और चिंतन नाम मात्र का ही संभव हो पा रहा है। आज शिक्षा के स्वरूप में जो बदलाव आया है उसे देखकर लगता है कि अब बच्चों को पढ़ाना आसान नहीं है। कोरोना से पहले बच्चे, शिक्षक और अभिभावक शिक्षा के तीन महत्वपूर्ण अंगों के रूप में देखा जाता था।हमारी शिक्षा व्यवस्था के ये तीन स्तंभ परस्पर जुड़े हुए थे और सारा कार्य सुचारू रूप से चल रहा था। किंतु अब इसमें डिजिटल वाली एक नई कड़ी और जुड़ गई है। हालांकि शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक कीसबसे ज्यादा महत्व और भूमिका को कोई आज भी नजरंदाज नहीं कर सकता लेकिन वर्चुवल कक्षाओं में इंटरनेट का कद अब थोड़ा ऊंचा हो गया है।

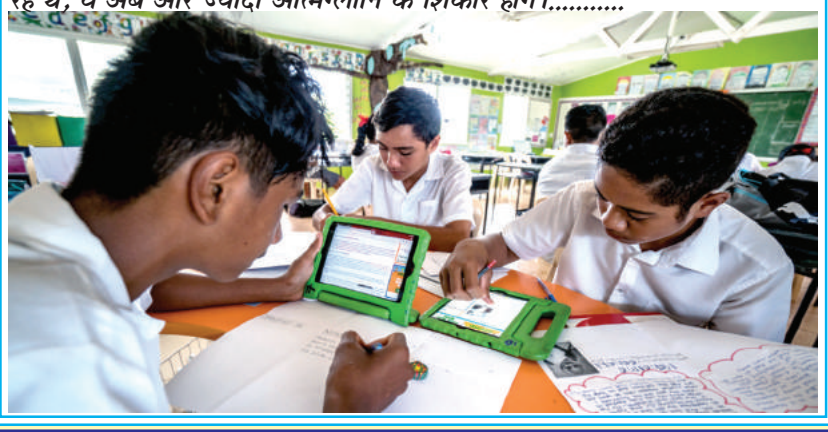

कोरोना के चलते लाकडाउन काल में शिक्षा का डिजिटलीकरण एक नए रंग रूप में सामने आया है। इसके बढ़ते महत्व को लेकर मानव समाज में खासी चर्चा और चिंता व्याप्त है। क्योंकि हमारे देश में आज भी एक बड़ी आबादी के पास न तो स्मार्ट फोन है, न ही कंप्यूटर और न ही इंटरनेट की व्यवस्था है। ऐसे में अभिभावकों को अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के

- शेष पृष्ठ 8 पर

अन्तराष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) के अवसर पर उत्साह के साथ करें
योग कक्षाएं, योग चर्चा, आसन, प्राणायाम, व्यायाम का आयोजन

विश्व की समस्त आर्य समाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, गुरुकुलों, विद्यालयों एवं आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के तृतीय आयोजन 21 जून 2020 के अवसर पर सार्वजनिक स्थलों, सत्संग हॉल, पार्क, सामुदायिक भवन इत्यादि में सामूहिक रूप से- 1. योग कक्षाएं 2. योग के सम्बन्ध में वैदिक चर्चा 3. आसन 4. व्यायाम 5. प्राणायाम 6. सूर्य नमस्कार आदि यौगिक क्रियाओं का अनिवार्य रूप से आयोजन करें व अपने क्षेत्र के जन साधारण को आमंत्रित करके योग को अपनाने की अपील एवं संकल्प कराएं। **विशेष नोट** : 1. कोरोना वायरस के संक्रमण को दृष्टिगत रखते हुए सरकार एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन किया जाना अत्यावश्यक है। 2. योग दिवस पर के आयोजन की फोटो सभा के व्हाट्एप्प नं. 7428894010 पर भेजें।

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल	सुरेशचन्द्र आर्य	प्रकाश आर्य	धर्मपाल आर्य	विनय आर्य
संरक्षक	प्रधान	मन्त्री	प्रधान	महामन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली			दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा	

वेद-स्वाध्याय

साधना और तपस्या से जगत् में चमत्कार

देवान् यन्नथितो हुवे ब्रह्मचर्यं यदूषिम्।
अक्षान् यद् बभ्रूनालभी ते नो मृडन्त्वीदृशे।। अथर्व० 7/109/7
ऋषि : बादरायणिः।। देवता - अग्निः।। छन्दः अनुष्टुप।।

शब्दार्थ - **यत्** = जो **नाथितः** = उपतप्त हुआ मैं **देवान्** = देवों को **हुवे** = पुकारता हूं **यत्** = जो **ब्रह्मचर्यम्** = मैंने ब्रह्मचर्य को **ऊषिम** = बसा है, पालन किया है और **यत्** = जो **बभ्रून्**= हरण करने वाली **अक्षान्** = इन्द्रियों को **आलभे**= सब ओर से काबू किया है **ते** = मेरे ये सब कर्म **ईदृशे** = ऐसे विकट समय में **नः** = मुझे **मृडन्तु**= खुशी करें, यह प्राप्त कराकर सुखी करें।

विनय - हे प्रभो! बड़ा विकट समय उपस्थित है। मैं इस वर्तमान दुरावस्था को कैसे दूर करूं? मेरा इसमें कुछ बस नहीं चलता। मुझे हार पर हार खानी पड़ रही है। जिन लोगों ने यह दुरावस्था उत्पन्न की है वे मेरे सब न्यायोचित वचनों को अपने अन्याय पूर्ण दुष्कृतयों द्वारा निष्फल करते जा रहे हैं। मैं इस समय क्या करूं? जो मैं उत्पन्न होकर आज देवताओं का आह्वान कर रहा हूं, पुकार रहा हूं, क्या मेरा यह सब यत्न व्यर्थ ही जाएगा? क्या इस समय यह देव लोग भी आकर मेरी मदद नहीं करेंगे? जो मैंने अब तक ब्रह्मचर्य का उग्र= कठोर व्रत पालन किया है, क्या वह मेरा ब्रह्मचर्य तब भी इस दुरावस्था को पलट ना सकेगा? जो मैंने सबको हरण करने वाली, विद्वानों को भी खींचने वाली, दुर्दम इंद्रियों को सब ओर से काबू किया है, वह मेरी संयम की शक्ति भी क्या मुझे आज यह लाभ न करा सकेगी? ओह, मेरे यह सब यत्न यदि ऐसे समय पर भी मेरे काम न आएंगे तो और कब आएंगे? यह देखो, दूसरे लोग मुझ पर हंस रहे हैं, वे सचमुच समझ रहे हैं कि देवों का आह्वान, ब्रह्मचर्य की तपस्या और इंद्रियनिग्रह व्यर्थ की चीजें हैं। निरर्थक ढकोकले हैं। इसलिए हे प्रभो! अब तो ऐसा करो कि मेरे यह सब पुण्य कर्म मेरे यह देवाह्वान, ब्रह्मचर्य, संयम आदि सब पुण्य प्रयत्न - मुझे सूखी कर देंवें, विजय प्राप्त कराकर मुझे सुख पहुंचाने के कारण हो। अब तो ऐसा कर दो कि इन दिव्य शक्तियों का चमत्कार एक बार फिर जगत में प्रकट हो जाए। हे प्रभु मैं तुमसे और क्या कहूं? इस समय और क्या मांगू?

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

दिल्ली दंगों में पिंजरा तोड़ ग्रुप की भूमिका

पिंजरा तोड़ ग्रुप या देश तोड़ ग्रुप

.....महिला आजादी के नाम पर ये नारे लगा रही है कि चाँद बाग से राजघाट चलो ये दिल्ली होस्टल में पढने आई थी या राजनीती करने? और क्या राजनीती भी अपने ही देश के खिलाफ.? 'पिंजरा तोड़' में पिंजरा है ही नहीं, ये वामपंथियों की एक साजिश है कि वो किसी तरह देश के अन्य शिक्षण संस्थानों को जेएनयू, जाधवपुर, अलीगढ़ और जामिया जैसे वैसे संस्थान बना दें। जो अपनी शिक्षा के कारण नहीं, वामपंथियों की हिंसा, सेक्स, जिहाद, आतंकवाद,नक्सलवाद समेत हर वैसे मुद्दे पर चर्चा में आए जिसका छात्र जीवन से कोई वास्ता नहीं। शायद ये देश के हर कैम्पस को बर्बाद करना चाहते हैं, मुख्य काम देश के युवा शक्ति युवा महिलाओं को तबाह करना इनके एजेंडे का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हो?.....

खबर है कि दिल्ली पुलिस स्पेशल सेल ने जाफराबाद में हुए दंगों के मामले में पिंजरा तोड़ संगठन की सदस्य नताशा और देवांगना कलिता को गिरफ्तार किया है। सीएए कानून के विरोध में प्रदर्शन को लेकर महिलाओं को भड़काने और जगह जगह सुनियोजित तरीके से ऐसे प्रदर्शन शुरू करवाने में पिंजरा तोड़ ग्रुप की अहम भूमिका सामने आई है। नताशा और देवांगना की पीएफआई के कई लोगों समेत दंगों से जुड़े लोगों के साथ कई बार मीटिंग हुई जिसमें नताशा और देवांगना समेत दूसरे पिंजरा तोड़ के लोगों को भावनाए भड़काने और माहौल गरम करने को बोला गया। यानि अभी तक दंगे, आगजनी और राष्ट्रविरोधी कार्यों के लिए हिजबुल, लश्करे तैयबा जैश समेत पाकिस्तान की आई. एस. आई. का नाम सुना था अब अचानक से ये पिंजरा तोड़ संगठन कहाँ से आ गया?

बताया जा रहा है कि पिंजरा तोड़ ग्रुप कॉलेज की छात्राओं का एक कथित संगठन है, जिसमें दिल्ली यूनिवर्सिटी के नामी कॉलेजों की लड़कियां बताई जाती हैं। ये संगठन कॉलेज हॉस्टल के नियमों के खिलाफ काम करता है। मसलन होस्टल में आने-जाने की आजादी, कोई रात को होस्टल में आये जाये उसे ना रोका जाये। इस किस्म की अनेकों वाहियात आजादी इस ग्रुप की लडकियों को चाहिए। इस संगठन में कॉलेज की मौजूदा छात्राएं तो होती ही हैं, साथ ही उस कॉलेज से पढ़कर निकल चुकी पूर्व छात्राएं भी होती हैं।

2015 में गर्मी की छुट्टियों के बाद इस संगठन की नीव पड़ी थी। दिल्ली यूनिवर्सिटी खुली तो जामिया मिलिया इस्लामिया की छात्राओं को एक नोटिस जारी किया था। जिसके तहत लड़कियों को 8 बजे से बाद बाहर रहने की इजाजत नहीं थी। दिल्ली महिला आयोग ने इसका विरोध किया बस यहीं से पिंजरा तोड़ ग्रुप की शुरुआत हुई इसकी अधिकांश लड़कियां हिन्दू हैं। शायद इन्हें महिला अधिकार पितृसत्तात्मक सोच, फांसीवाद, नारीवादी नारे लगाकर महिला आजादी के नाम पिंजरा तोड़ संगठन से जोड़ा गया हो! जामिया से शुरुआत के बाद अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली, लेडी श्रीराम कॉलेज फॉर वीमेन, दिल्ली तकनीकी विश्वविद्यालय से छात्राओं को जोड़ा गया। अब यह गैंग राष्टीय बन गया और इस ग्रुप ने देश भर में, कई कॉलेजों, जैसे केरल एनआईटी कालीकट, आईआईटी-रुड़की, पंजाबी यूनिवर्सिटी तक अपने पैर पसार लिए।

यानि कई महिलावादी मुददे उठा उठाकर इसमें देश भर की छात्राओं को जोड़ा गया और पूरा तामझाम खड़ा किया गया। उन्हें बताया गया शादी बेकार चीज है, बच्चें पैदा करना बेकार काम है जिन्दगी का असली मजा मस्ती है। जबकि हॉस्टल के गेट किसी की आजादी को खत्म करने के लिए बंद नहीं किए जाते, बल्कि समाज की घटिया स्थिति को देखते हुए, उनकी सुरक्षा हेतु बचाव में उठाया गया एक कदम है, लड़कियों के माँ बाप हॉस्टल क्यों चुनते हैं? क्योंकि उन्हें लगता है कि बाहर किसी किराये वाले मकान में रहने से बेहतर कैम्पस के सुरक्षित माहौल में रहना है। लेकिन इन्हें वो गुलामी दिखी और शायद इसी कारण आन्दोलन खड़ा किया हो कि होस्टलो में वाई फाई देकर किसी के आने जाने की रोक हटाकर इन्हें अय्यासी के अड्डे बनाये जाये?

बताया जा रहा है कुछ महत्वकांक्षी लड़कियां और कुछ वामपंथनी मिलकर जब इनकी संख्या देश भर में बढ़ी तो अब इनका इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। खोखली आजादी के नारे और नारीवाद की बूंद इन्हें सोशल मीडिया के ग्रुप से इस कदर पिलाई जाने लगी कि उसके नशे में ये वो सब करने लगी जो इनके आका फरमान देते हैं। बाहर की सामाजिक व्यवस्था का आवरण होता तो कोई भी महिला तोड़ देती है लेकिन पिंजरा तोड़ने के अभियान में ये लड़कियां एक ऐसे पिंजरे में जा रही थी जिसे आज पुलिस तोड़ रही है।

हालाँकि बहुत पहले से ही डीयू कैम्पस में अलग वैचारिक 'क्रांति' की शुरुआत हो चुकी थी। हर एक बात को देश के युवाओं की आवाज' बता कर नाचने वाले लम्पटों को एक नया उद्योग मिल गया था। इसी तर्ज पर पिंजरा तोड़ की स्थापना की थी। लेकिन पिंजरा तोड़ ब्रिगेड को नहीं पता था कि कैसे इनका इस्तेमाल वामपंथी और देश विरोधी ताकतें कर रही हैं। पहले इनसे एलबीजीटी परेड में शाहीन बाग वाले देशद्रोह के आरोपी शरजील इमाम के समर्थन में उर्वशी चुडावाला सहित अनेकों हिन्दू लडकियों से नारे लगवाए और फिर इनके हाथों में पोस्टर थमा दिए जिनमें फ्री साईफा उर रहमान, फ्री सफुरा जरगर, फ्री सरजील इमाम, फ्री मीरान हैदर न जाने कितने देश द्रोहियों के पक्ष में ये आधुनिक क्रन्तिकारी लड़कियां उठ खड़ी हुई।

भला कोई इनसे पूछे की महिला आजादी के नाम पर ये नारे लगा रही हैं कि चाँद बाग से राजघाट चलो ये दिल्ली होस्टल में पढने आई थी या राजनीती करने? और क्या राजनीती भी अपने ही देश के खिलाफ.? 'पिंजरा तोड़' में पिंजरा है ही नहीं, ये वामपंथियों की एक साजिश है कि वो किसी तरह देश के अन्य शिक्षण संस्थानों को जेएनयू, जाधवपुर, अलीगढ़ और जामिया जैसे वैसे संस्थान बना दें। जो अपनी शिक्षा के कारण नहीं, वामपंथियों की हिंसा, सेक्स, जिहाद, आतंकवाद,नक्सलवाद समेत हर वैसे मुद्दे पर चर्चा में आए जिसका छात्र जीवन से कोई वास्ता नहीं। शायद ये देश के हर कैम्पस को बर्बाद करना चाहते हैं, मुख्य काम देश की युवा शक्ति युवा महिलाओं को तबाह करना इनके एजेंडे का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हो?

कुछ महिलावादी लेखिका जिनका पेट भरा हुआ है, जिन पर समाज और परिवार का कोई दबाव नहीं है वो इन्हें आजादी सिखाती है। इसके बाद उच्च वर्ग की अनेकों लड़कियां जिन्हें पढने-नहीं बल्कि केम्पस में मजे लूटने आना है जिनके ऊपर पढाई का कोई दबाव नहीं होता, जैसा 18-20 साल की प्रथम वर्ष की किसी लड़की पर होता है। बाहरी राज्यों की मध्यम निम्न वर्ग की लड़कियां इनके आजादी और पोर्न के भाषण सुनती है और सोचती है दीदी सही कहती है कि -

- शेष पृष्ठ 5 पर

श्रीरामजन्मभूमि के सम्बन्ध में बौद्धविहार-नवबौद्ध विवाद

मर्यादा पुरषोत्तम रामचन्द्र जी की पवित्र नगरी अयोध्या हिन्दुओं के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। यहां पर श्री रामचन्द्र जी का जन्म हुआ था। यह राम जन्मभूमि है। राम एक ऐतिहासिक महापुरुष थे किन्तु अब जैसे ही सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद अयोध्या राम मंदिर बनने की प्रक्रिया आरम्भ हुई तो भारत की एक नई नस्ल जिसे नवबौद्ध कहा जा रहा है। इन लोगों द्वारा एक नया आन्दोलन चलाना शुरू कर दिया कि राम जन्म भूमि स्थान के नीचे पहले बोद्ध विहार और मठ था।

अगर एक पल को इन तथाकथित बुद्धिजीवियों के वंशजों की बात मान भी ले कि मीर बाकि ने श्रीराम जी का नहीं महात्मा बुद्ध का मठ या विहार तोड़कर मस्जिद बनाई थी, तो 492 साल से आप कहाँ थे? क्यों कभी वहां अपना दावा पेश नहीं किया, जब 1992 में विवादित ढांचा गिराया गया तब ये लोग कहाँ थे? चलो ये भी छोड़ दिया जाये इस सवाल का जवाब कहाँ मिलेगा कि संविधान के रचियता बाबा साहेब आंबेडकर जी जो बाद में स्वयं बौद्ध बन गये थे और स्वतंत्र भारत के पहले कानून मंत्री भी रहे उन्होंने तो कोई केस फाइल नहीं किया कि विवादित मस्जिद के नीचे महात्मा बुद्ध का कुछ लेना देना था?

बाबरी विवाद में कुल पक्षकारों में कितने पक्षकार नवबौद्ध थे? चूँकि अब जैसे ही मजहब विशेष के लोग न्यायलय में बाबरी का केस हार गये और राम मंदिर का निर्माण कार्य शुरू हो गया है। तो शायद मजहब विशेष से जुड़े लोगों द्वारा नवबौद्ध आगे बढ़ाये कि महात्मा बुद्ध का भी अयोध्या में लेना देना था। अगर कुछ भी नहीं होगा तो मन मुटाव तो जरुर होगा ही।

इस मामले में एक चीज को देखिये कि राम मन्दिर जमीन पर ये दावा बुद्ध के असली उपासकों ने नहीं किया क्योंकि वो वह महात्मा बुद्ध का सार समझते है, महात्मा बुद्ध के बताये चार आर्य सत्य का मार्ग समझते है। आज वर्तमान में भी दलाई लामा जैसे संत इस देश में है जो बुद्ध के साथ-साथ सनातन की भी महत्ता समझते है। म्यांमार में बौद्ध भिक्षु विराथू इस सार को समझता है और श्रीलंका में बौद्ध संत अतुरालिये रतना तक जानते है कि बुद्ध ने न श्री राम का विरोध किया और ही न श्री कृष्ण जी का। न अपने किसी भी उपदेश में महात्मा बुद्ध ने सत्य सनातन वैदिक धर्म का विरोध किया। बल्कि और महात्मा बुद्ध ने एक सिद्दांत दिया एस: धम्मो सनंतनो अर्थात सनातन धर्म यही है।

अब ये जो नवबौद्ध है इनके साथ सबसे बड़ी समस्या ये है कि जय मीम जय भीम वाला संगठन है। वामन मेश्राम राखी रावण जैसे कुछ दिग्भ्रमित लोग इन्हें

बुद्ध के नाम पर नफरत का कारोबार

....बुद्ध के तथाकथित अनुयाई सनातन धर्म को कोसने की 22 प्रतिज्ञाएं दिलवा रहे हैं। इसमें सनातन धर्म पर अनर्गल टिप्पणी करने महापुरुषों का अपमान करने, ब्राह्मणों, क्षत्रियो, वैश्यों को गाली देने को ही बुद्धिजम कहा जा रहा है। वामपंथी और कुछ मुस्लिम नेताओं की शह पर कुछ दलित नेताओ ने दलितों को हिन्दुओ से अलग करके उन्हें भड़काकर राजनीतिक रोटियां सेक रहे हैं। बेशक बुद्ध को मानिये चाहे विष्णु का अवतार मान ले या महात्मा मान ले या इंसान या भगवान ही मान ले। बुद्ध को आये हुए दुनिया में मात्र 2500 वर्ष हुए हैं। क्या उसके पहले इनके बाप दादाओं का धर्म नही था, क्या वे लोग अधर्मी थे? और कैसे यह मान लें कि बौद्ध कोई धर्म है जब स्वयं बुद्ध ने स्वयं को सनातनी कहा है?.....

दीक्षित कर रहे हैं। इनका काम सिर्फ इतना है कि ये लोग मनुवाद को गाली, खुद को मूलनिवासी नाम की बीमारी से ग्रस्त बताना है यानि इन लोगों ने कसम खाई कि हम महात्मा बुद्ध जी के महान व्यक्तिव को मिटटी में मिला देंगे।

बुद्ध ने शांति का उपदेश दिया नवबौद्धों द्वारा शांति का नहीं नफरत का ज्यादा प्रचार किया जा रहा है। इनके आकाओं का मकसद है हिन्दू को आपस में लड़ाना ओर दलितों को बौद्ध बनाना। इसके बाद जिस तरीके से नफरत परोसी जा रही है सवाल है कि क्या महात्मा बुद्ध ने भी ऐसा ही किया था? क्या नवबौद्ध उन्हीं से शिक्षा लेकर ये कार्य कर रहे हैं? क्या नवबौद्ध सचमुच ही बौद्ध धर्म के सही मार्ग पर हैं? ऐसे कई सवाल पूछ सकते हैं। पूछिए उनसे कि क्या महात्मा बुद्ध ने राम और कृष्ण को अपशब्द कहे थे? शायद कोई जवाब नहीं आएगा क्योंकि भारत के बौद्ध समाज को छोड़कर दुनिया में कहीं भी ऐसा बौद्ध समाज ढूंढना मुश्किल है जो नफरत भरी राजनीति का प्रचार करता हो।

यदि बौद्ध मत नफरत के आधार पर खड़ा होता या उनकी हिन्दुओं से कोई लड़ाई होती तो निश्चित ही उनके साझा मंदिर नहीं होते। ऐसे अनेकों प्राचीन मंदिर है जहां पर विष्णु और बुद्ध की साथ-साथ मूर्तियां हैं। अजंता और एलोरा को अच्छे से देख लें, बर्मा, थाइलैंड के बौद्ध मंदिरों को भी अच्छे से देख लें।

अब जो लोग सोच रहे है ये नवबौद्ध सर मुंडाकर हाथ में घंटी की जगह झुनझुना पकड़कर जल्दी ही दलाई लामा, तिब्बती या जापानी बौद्ध भिक्षु बन जायेंगे तो बेकार सोच है। हाँ ये जरूर है अगर ये सभी लोग अम्बेडकर जी के समय में बौद्ध बन गये होते तो शायद लोग भारतीय बौद्ध धर्म को देखने-समझने के लायक जरूर हो गये होते और साथ ही मठों के आपसी झगड़ों को भी देख चुके होते।

लेकिन अब बुद्ध के तथाकथित अनुयाई सनातन धर्म को कोसने की 22 प्रतिज्ञाएं दिलवा रहे है। इसमें सनातन धर्म पर अनर्गल टिप्पणी करने महापुरुषों का अपमान करने, ब्राह्मणों, क्षत्रियो, वैश्यों को गाली देने को ही बुद्धिजम कहा जा रहा है। वामपंथी और कुछ मुस्लिम नेताओं की शह पर कुछ दलित नेताओ ने दलितों को हिन्दुओ से अलग करके उन्हें भड़काकर राजनीतिक रोटियां सेक रहे हैं। बेशक बुद्ध को मानिये चाहे विष्णु का अवतार मान ले या महात्मा मान ले या इंसान या भगवान ही मान ले। बुद्ध को आये हुए दुनिया में मात्र 2500 वर्ष हुए है। क्या उसके पहले इनके बाप दादाओं का धर्म नही था, क्या वे लोग अधर्मी थे? और कैसे यह मान ले की बौद्ध कोई धर्म है जब स्वयं बुद्ध ने स्वयं को सनातनी कहा है?

महात्मा बुद्ध ने कभी भी नफरत का संदेश नहीं दिया था न ही उन्होंने कभी नया धर्म अथवा संप्रदाय खड़ा किया था। हां, उनके अनुयायी जरूर बौद्ध कहलाए, उन्होंने कभी भी ऐसा नहीं कहा था कि जिससे लोगों के मन में उनके प्रति घृणा उत्पन्न हो या किसी का दिल दुखे। उन्होंने कभी भी ब्रह्मा, विष्णु, शिव, राम और कृष्ण के खिलाफ कुछ नहीं बोला था। बुद्ध ने तो निर्वाण पथ के संबंध में अपने प्रवचन दिए थे जिसके प्रभाव के चलते उनके काल में लोग बौद्ध मार्ग यानि ज्ञान मार्ग पर चल पड़े थे, बुद्ध ने तो कभी भी कोई 22 प्रतिज्ञाएं नहीं दिलवाई थी।

अब जहाँ तक नवबौद्ध द्वारा जमीन के लिए याचिका दी जा रही है तो जहां तक सवाल अयोध्या का है तो वहां न तो बुद्ध का जन्म हुआ, नहीं वहां उनको संबोधि घटित हुई और न ही उन्होंने वहां निर्वाण प्राप्त किया। हां, उनके द्वारा वहां पर विहार जरूर किया गया। उस काल में इन नगर को साकेत कहा जाता था। गौतम बुद्ध का जन्म ईसा से 563 साल पहले हुआ था। सिद्धार्थ गौतम बुद्ध ने गुरु विश्वामित्र के पास वेद, उपनिषद् और योग की शिक्षा ली थी। क्षत्रिय शाक्य वंश में जन्में गौतम बुद्ध ने कभी भी खंडन-मंडन या नफरत के आधार पर अपने सिद्धान्त या धर्म को खड़ा नहीं किया। बल्कि बिखरे हुए सनातन धर्म को एक व्यवस्था दी थी लेकिन लोग आज उनके नाम पर नवबौद्ध बनकर समाज में बुद्ध के सिद्दांत का अपमान कर रहे है। शायद नवबौद्ध बने इन लोगों ने बुद्ध के सिद्धान्त जय मीम वालो के हाथों बेच दिए है।

- राजीव चौधरी

पृष्ठ 2 का शेष

पिंजरा तोड़ ग्रुप या देश तोड़ ...

जब लड़के बारह बजे तक घूमते हैं, तो हमारे हॉस्टल पर आठ बजे ताला क्यों?

इससे प्रभावित बाहरी राज्यों से आई लड़कियां इस वामपंथी प्रोपेगेंडा का हिस्सा बन जाती हैं जो हर उस विषय पर भीड़ की शक्ल ले कर पहुँच जाता है, जो वामपंथियों के बड़े एजेंडे का हिस्सा होता है। आप इनके ट्विटर अकाउंट देखिये फेसबुक देखिये इनका ब्रेनवास इस तरीके से किया गया है कि इनकी पोस्ट में अपने हिन्दू धर्म का विरोध होगा या इस राष्ट्र की अखंडता का विरोध होगा।

इनके हर पोस्ट से आपको या तो हिन्दू-घृणा नजर आएगी या फिर ये समाज को जातियों की तर्ज पर तोड़ने की बातें करती दिखेंगी, यानि इनका एजेंडा साफ है कि हॉस्टल के ताले तो बस एक छलावा हैं, इनकी श्यामल आत्मा उसी रक्तपिपासु वामपंथी एजेंडे पर चल रही है जो देश के हर राज्य को अलग करने का सपना देखता है, इसलिए, 'पिंजरा तोड़' नक्सलियों की सम्मोहित राष्ट्रदोही सेना से ज्यादा कुछ भी नहीं कहा का जा सकता बाकि पुलिस की जाँच के बाद अभी और चेहरे उजागर होने बाकि हैं।- **सम्पादक**

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है।

वार्षिक शुल्क 250/- रुपये तथा **आजीवन शुल्क** (मात्र दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें।

- सम्पादक

केरल में गर्भवती हथिनी की हत्या के सन्दर्भ में

केरल में सरकार की अनुमति से बनते हैं अनानास बम

केरल और केन्द्र सरकार दोषियों पर करे सख्त कार्यवाही - सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

केरल में एक गर्भवती हथनी को अनानास बम खिलाकर मार देने की घटना पर आज पूरे देश में सोशल मीडिया पर अनेक लोग सवाल उठा रहे हैं कि अनानास से बम बनाकर कैसे खिलाया जा सकता है? इसका जवाब है कि खिलाया जा सकता है। इससे आगे सवाल है कि बिना आग के वह कैसे फट सकता है? इन ज्ञानियों को यह नहीं पता कि केरल में जंगली सूअरों को मारने के लिए विशेष तौर पर अनानास बम तैयार किए जाने की वहां सरकारी अनुमति है, वहां कुछ लोग काम ही यही करते हैं। वह अनानास के अंदर बारूद भरते हैं, जो दबाव पड़ने पर फट जाता है। जंगली सूअरों को मारने के लिए सरकारी अनुमति से तैयार यह अनानास बम वहां हाथियों की भी जान ले रहा है। इस समय देश में सबसे ज्यादा हाथी केरल में ही मारे जा रहे हैं।

पर्यावरण के लिए काम कर रहीं पूर्व केंद्रीय मंत्री मेनका गांधी ने बताया कि केरल में हर साल लगभग 600 हाथी क्रूरता से मार दिए जाते हैं। उनका कहना है कि केरल में ऊपर से लेकर नीचे तक सरकारी तंत्र इस मामले में कुछ भी सुनने को तैयार नहीं है। एक खास क्षेत्र मल्लापुरम का जिक्र करते हुए वे बताती हैं कि वहां महीने में एक बार सड़कों पर खाने की चीजों में जहर मिलाकर कुत्तों को मारा जाता है।

पिछले दिनों टीवी चौनल पर मेनका गांधी बता रही थीं कि केरल में अगले आठ 10 दिन में कम से कम तीन और हाथी मौत के कगार पर खड़े हैं, उन्हें यातनाएं दी जा रही हैं वह बार-बार केरल सरकार से और वन विभाग से अनुरोध कर रही हैं लेकिन हाथियों को मुक्त नहीं कराया जा रहा है। हाथियों को यातना दिए जाने के जो तरीके मेनका गांधी बताती हैं उन्हें सुनकर किसी भी मनुष्य का हृदय कांप उठेगा। वे बताती हैं कि हाथियों के पावों में जंग लगी कील ठोक-ठोककर उन्हें जख्म दिए जाते हैं, जो एक दिन उनकी मौत का कारण बन जाते हैं। वहां ऐसा इसलिए किया जाता है क्योंकि प्राइवेट हाथों में ज्यादातर हाथी रहते हैं, हाथियों के माध्यम से भीख मंगवाने का कार्य किया जाता है। हाथियों को इस तरह प्रशिक्षित किया जाता है कि कोई व्यक्ति पैसे दे तो उसके सिर पर सूंड रखकर आशीर्वाद देते हैं। जिंदगी भर यह काम करवाने के बाद बुढ़ापे में इन हाथियों को वे इसलिए मार देते हैं जिससे इनका मोटा बीमा उन्हें मिल जाए। हाथी की मौत के बाद बीमे की राशि वसूल कर ली जाती है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने केरल के पालक्कड़ जिले की साइलेंट वैली में गर्भवती हथिनी की हत्या पर दु:ख जताते हुए कहा कि भारतीय समाज में विशाल काय हाथी को लेकर कई प्रसिद्ध फिल्में और नाटक-नाटिकाएं भी दिखाई जाती रही हैं, जिसके परिणाम स्वरूप हमारे यहां सर्कश आदि में भी बच्चे तथा हर आयुवर्ग के लोग हाथी के करतब देखकर गौरव महसूस करते रहे हैं। लेकिन आज के समय में शायद मनुष्य यह भूल चुका है कि हाथी जैसे शक्तिशाली जीव की समाज में कितनी उपयोगिता और आवश्यकता है, तभी तो कुछ राक्षस प्रवृत्ति के लोगों ने न केवल एक हथिनी को ही नहीं मारा अपितु उसके गर्भ में पल रहे भ्रूण को भी नष्ट करने का अपराध किया है। इस पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की मांग है कि ऐसे क्रूर राक्षसों को कठोर से कठोर दण्ड देकर समाज को स्पष्ट सन्देश देना चाहिए कि आगे से कोई ऐसी हिमाकत न करे।

मेनका गांधी के अनुसार उन्होंने इस मामले को सुप्रीम कोर्ट में भी उठाया था। लेकिन 7 साल हो चुके हैं मगर तारीख पर तारीख के अलावा कुछ नहीं मिल पा रहा। इस दौरान देश में हजारों हाथियों की मौत हो चुकी है। वे बताती हैं कि पांडिचेरी में एक मंदिर में एक हाथी के चारों पैरों में मोटी जंजीरे डालकर उसे रखा गया था। किसी तरह उन्होंने उसे मुक्त कराकर उड़ीसा के एक सेंटर में भिजवाया। लेकिन पांडिचेरी की सरकार ने कुछ दिनों बाद उसे वापस मंगवाकर उसी मंदिर के हवाले कर दिया।

श्रीमती मेनका गांधी ने इस बात पर भी निराशा जताई कि केरल में सांसद होने के बावजूद राहुल गांधी हाथी की मौत पर दुख व्यक्त नहीं कर रहे। लेकिन खास बात यह है कि जिस समय मेनका गांधी टीवी पर यह बात कर रही थी उसी समय कांग्रेस के एक अधिकृत प्रवक्ता का मैसेज एंकर के पास पहुंचा, जिसमें कहा गया कि राहुल गांधी केरल के सिर्फ सांसद हैं, मंत्री नहीं।

- *शेष पृष्ठ 8 पर*

आपके लिए अनुपयोगी वस्त्र, जूते-चप्पल, स्टेशनरी के सामान, खिलौने आदि को जरुरतमंद लोगों तक पहुंचाने की विशेष योजना

आओ, हम जुड़ें 'सहयोग' से : सच्चे - अच्छे योग से

"सहयोग" सेवा यज्ञ हमारा
जरूरतमंदों को मिला सहारा
आओ, हाथ बढ़ाएं- सहयोगी बन जाएं

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित सहयोग एक ऐसी कल्याणकारी दिव्य योजना है, जिससे लाखों लोग लगातार लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

सहयोग : क्या है योजना?

सहयोग एक चार अक्षरों का छोटा-सा शब्द है, लेकिन इसकी महिमा अपरमपार है। सहयोग के माध्यम से शहरों, नगरों और आदिवासी क्षेत्रों में अभावग्रस्त मनुष्यों की सेवा सहायता का एक महान अभियान गतिशील है। यह सर्वविदित है कि अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा मानव सेवा के कई विशेष कार्य काफी लंबे समय से चल रहे हैं। इन सेवाकार्यों को गति देते हुए संघ के अधिकारियों ने गीरब व आदिवासी क्षेत्रों में ईश्वर की अमृत संतान मनुष्यों को बड़ी तंगहाली और बदहाली में करीब से व्यथित जीवन जीते देखा तो ज्ञात हुआ कि विश्व की छटी अर्थव्यवस्था के रूप में विख्यात भारत में आज भी लोग अपनी मूलभूत जरूरतों से महरूम हैं। तन ढांपने के लिए वस्त्र और जूते, चप्पल आदि की जरूरतें भी लोगों को रुला रही हैं। यह देखकर आर्य नेताओं को ऋषि दयानंद के महान जीवन से जुड़ी घटना याद आ गई कि किस तरह एक निर्धन मां ने अपने बच्चे के मृत शरीर से कफन को उतार कर उसे नग्न ही जल में प्रवाहित कर दिया था। इस मार्मिक घटना से ऋषि का कोमल हृदय द्रवित हो उठा और उन्होंने अपने शरीर पर वस्त्र धारण करना ही बंद कर दिया। ऋषि दयानंद के अनुयायी आर्यजनों ने महान कर्मयोगी महाशय धर्मपाल जी से निर्धन बस्तियों में और आदिवासी बंधुओं की इस पीड़ा के विषय में विचार-विमर्श कर के आदिवासी क्षेत्रों में या अन्य किसी भी स्थान पर जरूरतमंदों की पहचान कर उन्हें पुराने किंतु उपयोगी वस्त्र जूते, चप्पल, पुस्तकें, खिलौने, स्टेशनरी आदि समानों को उन तक पहुंचाने के लिए **"सहयोग"** नामक योजना का शुभारंभ किया। जो कि आज तीव्र गति से जरूरतमंद छात्रों, युवाओं और वृद्धजनों को लगातार सहयोग प्रदान कर रहा है।

कैसे बनें "सहयोग" के सदस्य?

⋆ सहयोग में सहभागिता के लिए पहला बिंदु है कि आप जिन वस्त्रों का प्रयोग नहीं करते, उन उपयोगी वस्त्रों को स्वच्छ करके, प्रेस कराके, पैकट में रखकर अपनी नजदीकी आर्यसमाज अथवा सहयोग के सेंटर पर पहुंचाएं ।

⋆ इसी तरह से आप जिन जूते, चप्पलों का प्रयोग नहीं करते वे दूसरों के काम आने लायक हों तो उन्हें पोलिश कराके उन्हें भी पैकट में रखें और वस्त्रों की तरह सहयोग के लिए सेंटर पर भेजें।

⋆ इस क्रम में आप खिलौने, पुस्तक, कॉपी, पैन, पेंसिल आदि उपयोगी वस्तुएं भी विधिवत जैसे किसी को गिफ्ट दिया जाता है वैसे ही पैक करके सहयोग के सहयोगी बनें।

इस सारे समान को सहयोग स्वयं अपनी गाड़ी द्वारा प्राप्त कर लेगा और आप सहयोग के अनन्य सहयोगी सदस्य बन जाएंगे।

निवेदन :- आधुनिक परिवेश में आर्यजनों को ऐसी विभिन्न सेवा योजनाओं को क्रियान्वित करना ही होगा, क्योंकि मानवता आर्य समाज को पुकार रही है, अन्य अनेक तथाकथित दिखावटी, बनावटी संस्थाएं सेवा के नाम पर बढ़ चढ़कर ढोंग कर रही हैं, लोभ-लालच में भोले-भाले निर्धन लोगों कों विधर्मी बनाने पर तुली हुई हैं। अत: हमें अपने कर्तव्यों को समझना होगा और आर्य समाज की और से निरंतर सृजनात्मक कार्यो को गति देनी होगी। इसलिए आप दिल्ली अथवा एन सी आर में जहां भी रहते हैं वहीं अपने आर्य समाज में, आर्य शिक्षण संस्थान में या अपने गली-मोहल्ले में सहयोग का सेंटर बनाएं और इस अनुपम सेवा को वृहद अभियान का रूप देने में सहयोगी बनें दें।

आओ, करें सहयोग,
शुभ कर्मो का योग

अधिक जानकारी प्राप्त करने, सहयोग से जुड़ने के लिए अथवा आप द्वारा एकत्र किया गया सहयोग जरुरतमंदों तक पहुंचाने के लिए मो. नं. 9540050322 पर सम्पर्क। - ***व्यवस्थापक***

कोरोना काल में वैदिक सिद्धांतों की और .....

प्रथम पृष्ठ का शेष

कोई भी मनुष्य धरती पर ऐसा नहीं है जिसने सारे सात्विक आहार खाए हों, अगर केवल फलों की ही बात की जाए तो संसार में इतनी तरह के फल और सब्जियां हैं कि कोई भी मनुष्य यह नहीं कह सकता कि मैंने सारी दुनिया के फलों -सब्जियों को खाया है। फिर भी मनुष्य पशु-पक्षियों, जीव-जंतुओं और यहां तक कि कीड़े-मकोड़ों, जहरीले सांप और चमगादड़ जैसे जीवों खा-खाकर सुख- शांति से जीवन जीना चाहता है। आर्य समाज की मान्यता है कि प्रत्येक व्यक्ति को शुद्ध-सात्विक, पोष्टिक और ऋतु के अनुकूल आहार ग्रहण करना चाहिए। चाहे कैसी भी स्थिति हो मांस भक्षण मनुष्य के लिए सर्वदा निषेध है। लेकिन मनुष्य है कि मानता ही नहीं और अपने कुकृत्यों के बचाव के लिए झूठे तर्क भी देता है कि ये सारे जीव जंतु, पशु-पक्षी मनुष्य के लिए ही तो हैं, फिर इन्हें मनुष्य क्यों न खाए? आर्य समाज के वैदिक सिद्धांतों के अनुसार यह सही है कि संसार में जितने भी जीव जंतु,पशु-पक्षी और अनेक अन्य योनियां मनुष्य के लिए ही हैं, किंतु मनुष्य के खाने के लिए कदापि नहीं हैं, ये तो मनुष्य की रक्षा, सेवा, सहयोग के लिए हैं न कि उसके भक्षण के लिए।

संसार में एक तिनका भी बिना प्रयोजन के लिए नहीं उगता, इस पृथ्वीग्रह पर हर जीव का अपना अस्तित्व है। सांप और बिच्छु भी हवाओं में से विषैला तत्व खींचकर मनुष्य का उपकार करते हैं,मछली जल में रहकर जल का शोधन करती हैं, मुर्गे-मुर्गियां भी गंदे कीटाणुओं को खाकर स्वच्छता में सहयोगी होते हैं। ये सारी भोग योनियां अपने अपने कर्मो के अनुसार भोग भोगने के लिए परतंत्र हैं, लेकिन मनुष्य इन्हें अपना आहार बनाने का जो पाप करता है उसका दंड़ तो प्रकृति अवश्य देती है। मनुष्य कर्म करने में पूर्ण स्वतंत्र है, लेकिन कर्मफल तो ईश्वर के अधीन है। आज जो मौत का तांडव पूरी दुनिया में मचा हुआ है यह मनुष्य के अपने कर्मो का ही तो फल है। एक तरफ कोरोना की महामारी और दूसरी तरफ भूकंप के झटके, इसके साथ-साथ समुद्री तूफान और कहीं-कहीं ओलावृष्टि और असमय बारिस। ये समस्त प्राकृतिक प्रकोप मनुष्य के अपने ही कर्मो का तो फल है, जिसे मानव समाज भोग रहा है।

आर्य समाज हमेशा से बार-बार मानवमात्र को जगाता रहा है कि अपने मानवीय मूल्यों को समझिए, ईश्वर की व्यवस्था और नियमों को अपनाइए, अपना मनुष्य वाला शुद्ध-सात्विक आहार ग्रहण करिए, जीवों के उपर दया करिए, अपने पेट की आग बुझाने के लिए इन मूक जीवों को मत मारिए, ईश्वर की न्याय व्यवस्था बड़ी कठोर है, वहां किसी की एक नहीं चलती। वह ईश्वर किसी को भी सूई की नोक के बराबर भी कम या अधिक कर्मफल नहीं देता। ये जितने भी पशु-पक्षी जीव जंतु भोग भोग रहे हैं, इनको इनके कर्म के अनुसार कर्मफल देकर भगवान ने इनके साथ पूरा न्याय किया है, लेकिन उस दयालू ईश्वर ने इनके उपर दया भी की है, जो चीजें ये सब जीव खाते हैं वे गंदी चीजें ही इन्हें पुष्टी देती हैं, इन्हें जीवन देती हैं, अगर उस गंदगी या जहर को मनुष्य खा ले तो वह उसके लिए प्राणों घातक होती हैं।अत: हे मनुष्यों अपने आहार को ठीक करो, इससे आपके विचार भी ठीक होंगे और जीवन भी सुखमय होगा।

आज पूरे भारत और विश्व के लोग चाहे कोरोना के डर के कारण ही सही आर्य समाज के शकाहार संबंधी विचारों को चाहे कम संख्या में ही सही लेकिन मानने लगा है। मांसाहार को त्यागने लगा है। अपने परिवार और बच्चों को भी यह कहने लगा है कि अगर जीना है तो मांसाहार छोड़ना ही होगा। इस महत्वपूर्ण विषय पर लोग जागरूक हो रहे हैं।

स्वदेशी और आर्य समाज

आर्य समाज सदा से राष्ट्र निर्माण, राष्ट्र सेवा और राष्ट्र रक्षा को सर्वोपरी मानता आया है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने ही सर्व प्रथम स्वराज्य का उदघोष करते हुए कहा था कि चाहे विदेशी राजा कितना भी अच्छा क्यों न हो लेकिन वह स्वदेशी से हितकर नहीं हो सकता। आज कोरोना काल में चारों तरफ स्वदेशी को अपनाकर आत्म निर्भर भारत के निर्माण के लिए नीचे से लेकर ऊपर तक खूब जोर लगाया जा रहा है। यह कहीं-न-कहीं महर्षि दयानंद सरस्वती जी का विचार ही प्रबल हो रहा है। 12 मई 2020 को भारत के प्रधानमंत्री जी ने भी आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए स्वदेशी उत्पादों को ब्रेंड बनाने पर जोर दिया था। उस समय प्रधान मंत्री जी ने यह भी उल्लेख किया था कि भारत वासी जब ठान लेते हैं तो उसे करके भी दिखाते हैं, उन्होंने अपनी वर्षो पुरानी खादी की अपील के विषय में बताया था किस तरह खादी के कपड़ों का बाजार गुलजार हो गया। यहां पर यह तो मानना ही पड़ेगा कि मोदी जी जो कहते हैं उसे पूरा करने का प्रयास भी करते है।उनकी इस खूबी के चर्चे तो पाकिस्तान के पत्रकार और बुद्धिजीवि भी करते हैं कि मोदी जी जो कहते हैं उसे पूरा भी करते हैं।इसी लिए जो पुलिस फोर्स के लिए सामानों की खरीदी के लिए कैंटीन बनाई हुई हैं वहां से विदेशी सामान सैंकडों की संख्या में कम होने शुरू हो गए हैं। इसका मतलब है कि स्वदेशी का सपना अवश्य पूरा होगा। आर्य समाज स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत के नव निर्माण के विचार का स्वागत करता है और इसके लिए हमें आगे भी आना चाहिए। क्योंकि आत्मनिर्भर व्यक्ति, परिवार,समाज और देश ही उन्नति प्रगति और सफलता की सीढियां चढा करते हैं जबकि दूसरों के भरोसे तो बेबसी और लाचारी ही दिखाई देती है।

- आचार्य अनिल शास्त्री

युवाओं के लिए एक स्वर्णिम अवसर : सार्वदेशिक आर्य वीर दल का ऑनलाइन राष्ट्रीय शिविर

देश की युवा शक्ति को सुदिशा प्रदान करने के लिए कृतसंकल्प सार्वदेशिक आर्य वीर दल हर वर्ष प्रांतीय और राष्ट्रीय स्तरों पर अनेकों प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करता है । इस वर्ष जब कोरोना वायरस के कारण पूरी दुनिया और भारत में किसी भी प्रकार के सामूहिक आयोजन को सार्वजनिक स्थलों पर करने की मनाही है तो सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा घोषित सभी प्रांतीय और राष्ट्रीय शिविरों को मानव समाज की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए निरस्त करने का फैसला लिया। लेकिन आधुनिक तकनीक का प्रयोग करते हुए आर्य समाज के टी वी चौनल आर्य संदेश के माध्यम से यूट्यूब पर ऑनलाइन राष्ट्रीय शिविर का आयोजन 1 जून से 15 जून तक किया गया है। इस शिविर में आर्यवीर श्रेणी और शाखा नायक श्रेणी के युवाओं को घर बैठे प्रात: काल 8 बजे और सायं काल 6 बजे से दो सत्रों में वह सब कुछ सिखाया जा रहा है जोकि आवासीय प्रांतीय और राष्ट्रीय शिविरों में सुयोग्य शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

शिविर में भाग लेने के लिए बच्चों को करें प्रेरित

सभी प्रांतीय सभाओं, आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं और आर्य परिवारों से अनुरोध है कि वे बच्चों को इस विशेष शिविर में भाग लेने के लिए अवश्य प्रेरित करें। पिछले 3 महीनों से घर बैठे बोर हो रहे बच्चों को कुछ नया सीखने को मिलेगा, और वह ऐसी महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी, जिससे उनका शारीरिक आत्मिक और सामाजिक विकास होगा। बच्चों में सकारात्मकता बढ़ेगी, उनकी रोग-प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी) बढ़ेगी, आर्य समाज के प्रति उनकी निष्ठा बढ़ेगी, जीवन के लक्ष्य और उद्देश्य का उन्हें ज्ञान होगा।

बच्चों की ऊर्जा को दें सही दिशा

अच्छा न सिखाने पर ही बुरा सीखते हैं बच्चे। इसलिए हमें अपने किशोर अवस्था और युवाओं को आर्य वीर दल के रचनात्मक शिविरों में प्रशिक्षण दिलवाना चाहिए, जिससे उनका जीवन निर्माण और विकास संभव हो,अभी पिछले दिनों टीवी में समाचार में बताया गया था कि अच्छे धनाढ्य घरानों के बच्चे, बच्चियों ने मोबाइल पर ग्रुप बनाकर क्या-क्या नये कारनामे किए, कहने का मतलब है कि अगर हम अपने बच्चों को अच्छा नही सिखाएंगे तो वे बुरा ही सीखेंगे क्योंकि बच्चों की एक खास आदत होती है वे कुछ ना कुछ नया सीखना और करना चाहते हैं। अत: हम अपने बच्चों को वैदिक संस्कारों से अनुप्राणित करें, अपनी संस्कृति, सभ्यता और आदर्शों से अवगत कराएं, इसके लिए आर्य वीर दल द्वारा आयोजित यह शिविर अपने आप में एक सुनहरा अवसर है इससे बच्चों का सर्वांगीण विकास होगा और बच्चों अपना अपने परिवार का और अपने देश का नाम ऊंचा करेंगे।

अच्छा अवसर है प्रात: सायं व्यायाम, आसन प्राणायाम सर्वांग सुंदर व्यायाम, नियुद्धम, दंड बैठक और बौद्धिक की कक्षाएं लेकर बच्चे अपने मनोबल को, शारीरिक बल को और आत्मिक बल को बढ़ाएंगे। हम सब मिलकर इस राष्ट्रीय शिविर में बच्चों को भाग लेने के लिए जरूर प्रेरित करें।

- सत्यवीर शास्त्री, प्रधान संचालक

गतांक से आगे -

अनावश्यक चिन्ता (Anxiety) से कैसे बचें?

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

पूर्ण पुरुषार्थ करो परन्तु फल के विषय में अनावश्यक चिन्तन करना या सोचना उचित नहीं है

गीता कहती है- कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन तुम्हारा कर्म करने में ही अधिकार है फल में नहीं। फल प्राप्ति ईश्वराधीन है। आम बेचने वाले को आम और बबूल बोने वाले को कांटे ही मिलेंगे। ईश्वर के यहाँ देर है पर अन्धेर नहीं। इसे निष्काम कर्म करना कहते हैं जिसमें फल की आकांक्षा को त्याग केवल कर्त्तव्य कर्मों को करते जाना है।

अनावश्यक हवाई किले बनाना या दिवास्वप्न देखना अनुचित है।

इस विषय में शेखचिल्ली की कथा सुनाना उचित रहेगा। किसी ग्राम में एक घी के व्यापारी ने घी खरीदा। नगर में जाने के लिये उसने शेखचिल्ली नाम के युवक से कहा तुम यह घी का घड़ा लेकर चलो। तुम्हें चार आने पारिश्रामिक मिलेंगे। व्यापारी मन में यह सोचता हुआ जा रहा था कि इस घी का विक्रय कर मुझे इसका एक रुपया लाभांश मिलेगा। दस रुपये सेठ को दूंगा। ऐसे दशफेरों में दस रुपये हो जायेंगे। इसी भाँति दस से सौ, एक सहस्र लक्ष, करोड़ रुपयों से कोठियाँ खरीद कर राजाओं के समान ठाठ-बाट से रहूँगा। इधर शेखचिल्ली ने विचार किया कि चार आने की रूई लेकर उसका सूत कात कर बेचने से मुझे आठ आने मिलेंगे। फिर आठ से एक रुपया हो जायेगा। वैसे ही दो रुपये होंगे। उनको बेच कर बकरी लूंगा। जब उसके बच्चे होंगे तो उन्हें बेच कर गाय खरीदूंगा। गाय से भैंस और भैंस से घोड़ी और घोड़ी से हथिनी लूंगा। उन्हें बेच दो बीबियों से शादी करूंगा। एक का नाम प्यारी और दूसरी का बेप्यारी रखूंगा। जब प्यारी के बच्चे गोद में बैठने को आयेंगे तो कहूँगा आओ बैठो और जब बेप्यारी के बच्चे गोद में बैठने का आग्रह करेंगे तो मैं कहूँगा नहीं नहीं। ऐसा कह कर सिर हिला दिया। घड़ा भूमि पर गिर कर फूट गया। घी को भूमि पर बिखरा देख व्यापारी रोने लगा और शेखचिल्ली भी रोने लगा। उसने शेखचिल्ली को धमकाया कि घी गिरा कर रोता क्यों हैं। मैंने तो दस रुपये उधार लेकर घी खरीदा था। मेरा सारा करा कराया बिगड़ गया शेख चिल्ली ने कहा तेरी तो केवल दस रुपये की हानि हुई और मेरा तो बना बनाया घर ही बिगड़ गया। इसीलिये हवाई किले बनाना और दिवास्वप्न देखना छोड़ वर्तमान में ही जीने का विचार करना उचित है।

पूर्ण पुरुषार्थ करो परन्तु फल के विषय में अनावश्यक चिन्तन करना या सोचना उचित नहीं है

गीता कहती है-**कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन** तुम्हारा कर्म करने में ही अधिकार है फल में नहीं। फल प्राप्ति ईश्वराधीन है। आम बेचने वाले को आम और बबूल बोने वाले को कांटे ही मिलेंगे। ईश्वर के यहाँ देर है पर अन्धेर नहीं। इसे निष्काम कर्म करना कहते हैं जिसमें फल की आकांक्षा को त्याग केवल कर्त्तव्य कर्मों को करते जाना है।

अपने दु:खों की चर्चा दूसरों से न करो

आपने दु:खों को दूसरों के सामने बढ़ा-चढ़ा कर कहने वाला व्यक्ति दु:खों को स्वीकार कर लेता है। इससे चिन्ता बढ़ेगी घटेगी नहीं। इधर दूसरे लोग सुनकर उपहास या उपेक्षा करेंगे। जीवन में सुख-दु:ख आते ही रहते हैं। दिन के पश्चात् रात्रि और फिर सूर्योदय होता है। जो दु:ख वर्तमान में है उसे सदा रहना नहीं। याद रखो-

रात कहेंगी होंगे उजाले फिर,
मत गिरना ओ गिरने वाले
इन्साँ उसको कहते हैं जो,
संभले और संभाले।।

कार्य को बाँटकर करना चाहिये

कई बार किसी बहुत बड़े और परिश्रम साध्य कार्य को देखकर व्यक्ति के हाथ-पैर फूल जाते हैं। ऐसे समय कर्त्तव्य पथ से विचलित न होकर कार्य को टुकड़ों में बाँटना और फिर एक भाग को पूरा करके फिर दूसरे भाग को करना चाहिये। ऐसा करने से हँसी-खुशी से सारा कार्य पूरा हो जायेगा। किसी कठिन कार्य में जो कार्य सरलता से किया जा सके उसे पहले कर लेने से फिर कठिन कार्य भी सरल दिखाई देने लगेगा। याद रखो गहरे पानी में डुबकी लगाने से ही मोती मिलते हैं।

चुनौतियों को स्वीकार करो

वह पथ क्या पाथिक कुशलता क्या
जिसमें बिखरे हुये शूल न हो।
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या
जब धारा ही प्रतिकूल न हो।।
डुबाये जो सफीनों को,
उसे तूफान कहते हैं।
जो तूफानों से टक्कर ले,
उसे इन्सान कहते हैं।।

- *क्रमश:*

Continue From Last Issue

Maharish Dayanand Saraswati's Beliefs

37. The validity of the octave evidence of logic is. unquestionable.

38. He is good and wise, who always speaks truth, acts on the dictates of virtue, and tries to make others. good and happy.

39. The five tests of knowledge are relative to the- attributes of God, (I) the philosophy of the absolute and the theories of the Vedas, (2) the maxims of the octave evidence of logic (3) the laws of nature, (4) the rules of morality, and (5) the principles of metaphysics. By these- criteria distinguish between truth and falsehood. Then,. abide by truth and give up falsehood.

40. Beneficence removes evils, introduces the practice of virtue, and adds to general welfare and civilization.

41. The soul is free to act, but subject to the justice of God in reaping the fruits of its works, God is the executor of justice and the like laws of nature.

42. Swarga (heaven) is the uninterrupted enjoyment of pleasures and the possession of means thereof.

43. The Naraka (hell) is the excessive sufferance of pain. the surroundings of tormenting circumstances.

44. The Janma (birth) is the entry of soul into the world in conjunction with the body. In relation to time, its existence is viewed as past, present and future.

45. The union of body and soul is called birth, and their separation death.

46. Marriage (clasping of hand) should be perfomed in accordance with precepts of the law in the public manner and on the mutual consent.

47. The Niyoga (widow re-marriage) is the temporary union of spouseless persons for the purpose of raising issue in the superior or one's own tribe, on the death of the consort, or the sterility of energy in case of a prolonged disease, or on the like natural mishaps to humanity.

48. The Stuti (Glorification) is the description of qualities from remembrance. It inspires love and the like generous feelings and sentiments.

49. The Prarthana (prayer) is the asking of God the gift of knowledge and the like boons, on the incompetency 'of one's own exertions. It results in the humility of temper and the tranquility of passions.

50. The Upasana (meditation) is the relization of the idea of God through the confirmation of conviction, that God is omnipresent and fills all, that I am filled by Him, and that He is in me and I in Him; and the imitation of God's attributes in practice. The good of it is attested *by* tbe enlargement of mental capacity for knowledge.

51. The Sag una Stuti is the assertion of recital of attributes predicable of God, The Nirguna Stuti (negative definition) is the nagation or denial of properties inconsis- tent with the nature of Godhead. The Sag una (positive prayer) is the supplication of God's grace for the obtain- ment of virtuous qualities. The Nirguna Prarthana (negative prayer) is the asking of God's power in the elimination Of vicious qualities. The Saguna U pasana (positive mgditation) is the unshaken belief of Gods' holiness. The Nirguna Upasana (negative meditation) is the total resignation of self to God's justice and. providence.

Such is the summary of my beliefs fully explained in their appropriate places in my books. called the *Satyarth Prak asli* (exposition of right sense), *Bhumika* (Iniroduction to the Vedas). and *Bhasliya* (commentary on the Vedas) I accept such universal maxims as the speaking of truth and the condemnation of falsehood. But I detest the religious warfare of of sects; for, they give vent to their angry passions and crude notion in the form of religion. There- fore, the purpose of my life is the extirpation of evils; introduction of truth in thought, speech, and deeds; the preservation of unity of religion; the expulsion of mutual enmity; the extension of friendly intercourse; and the advancement of public happiness by reciprocal subservience of the human family May the grace of the Almighty God and the consent and co-operation of the learned soon spread these doctrines all over the world, to facilitate everybody's endeavour in the advancement of virtue, wealth, godly pleasure, and selvation, so that peace, prosperity, and happiness may ever' reign in the world.!- Amen

To be continued.....

With thanks By:
"Flash of Truth"

भारत में विभिन्न सम्प्रदायों का बढ़ता धार्मिक साम्राज्य

कुरान, बाइबल और हम

.....हमारे वेद, उपनिषद और समस्त वैदिक साहित्य इसी भाषा की कोख से उत्पन्न हुए और अनेकों भाषाओँ में इनका प्रसार हुआ। लेकिन आज जब हम आज आधुनिक काल में सभ्यताओं के संघर्ष और भाषाओं के युद्ध को देखें तो हम अन्य मत मतान्तर से जुड़े लोगों से स्वयं को बहुत पीछे पाते है। अन्य मत वाले अपने सम्प्रदाय की कथित धार्मिक पुस्तकों को विश्व समेत अनेकों भारतीय भाषाओँ में उतारकर अपना धार्मिक साम्राज्य हमारे ही सामने फैलाते जा रहे है और हम मूकदर्शक बने इसे देख रहे है।.....

हमेशा से विचारों के आदान प्रदान के लिए भाषा की आवश्यकता होती है। धरती पर जब से मनुष्य का अस्तित्व है तब से वह भाषा का प्रयोग कर रहा है। भाषाओं में ही ज्ञान फैला और साहित्य से लेकर धर्म शास्त्र लिखे गये। हमें गर्व है अपनी वैदिक संस्कृति पर जिसनें हमें संस्कृत जैसी देववाणी अथवा सुरभारती भाषा दी।

हमारे वेद, उपनिषद और समस्त वैदिक साहित्य इसी भाषा की कोख से उत्पन्न हुए और अनेकों भाषाओँ में इनका प्रसार हुआ। लेकिन आज जब हम आज आधुनिक काल में सभ्यताओं के संघर्ष और भाषाओं के युद्ध को देखें तो हम अन्य मत मतान्तर से जुड़े लोगों से स्वयं को बहुत पीछे पाते है। अन्य मत वाले अपने सम्प्रदाय की कथित धार्मिक पुस्तकों को विश्व समेत अनेकों भारतीय भाषाओँ में उतारकर अपना धार्मिक साम्राज्य हमारे ही सामने फैलाते जा रहे है और हम मूकदर्शक बने इसे देख रहे है।

इस भाषाई युद्ध में अगर सबसे पहले ईसाई मत के ग्रन्थ बाइबल की बात करें तो एक ईसाई से जब गैर-ईसाई ने पूछा कि बाइबल के इतनी भाषाओं में अनुवाद क्यों हैं? तो ईसाई का जवाब था कि बिना इतनी भाषाओं के अनुवाद किये कुछ चुनिंदा लोग ही बाइबल पढ़ते है लेकिन हमें बाइबल को समूचे विश्व का धार्मिक ग्रन्थ बनाना है।

नतीजा आज दुनिया में 7097 ज्ञात भाषाएँ हैं। एक सदी पहले बाइबिल का लगभग 700 भाषाओं में अनुवाद किया गया था फिर 1500 से अधिक भाषाओं में अनुवाद किया गया। आज 7097 भाषाओं में से 3312 भाषाओं में बाइबल का अनुवाद कर उसे बांटा जा रहा है। दुनिया में बाईबल को घर-घर पहुँचाने का दावा करने वाले अंतरराष्ट्रीय संगठन

Wycliffe Associates का कहना है कि हमारे अनुवादकों का एक दल केवल कुछ महीनों में ही अलग-अलग भाषाओं में बाइबल का अनुवाद कर सकता है। संगठन का कहना है जल्दी ही हम 70 से अधिक देशों में 7000 से अधिक भाषाओं में अनुवादित बाइबिल को उतार देंगे।

कुरान - अरबी भाषा से चली कुरान को अगर विश्व भर में भाषाई नजरिये से देखें तो दुनिया की सबसे अधिक बोले जाने वाली 50 भाषाओं में आज कुरान उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त बुल्गारिया, ग्रीस, रोमानिया, यूक्रेन चीनी, हांगकांग, थाईलैंड, सिंगापुर समेत कई भारतीय भाषाओँ से लेकर आज कुरान पूरी तरह से 114 भाषाओं में अनुवादित होकर उपलब्ध है। भारतीय भाषाओँ के नजरिये से देखें तो कुरआन लगभग सभी राज्यों की भाषाओँ में उपलब्ध बताई जा रही है।

धम्मपद - धम्मपद यह बौद्ध मत के मानने वालों का ग्रन्थ है। यूँ तो धम्मपद का कई भाषाओं में अनुवाद किया गया है। जिनमें अंग्रेजी से लेकर स्पेनिश चीनी और तिब्बती संस्कृत, हिंदी, बंगाली, सिंहली, बर्मी और नेपाली भाषा समेत 22 भाषाओं में अनुवाद शामिल हैं। कई प्रतिष्ठित बौद्ध भिक्षु पाली भाषा के विद्वान, श्रीलंका के ए.पी. बुद्धदत्त द्वारा धम्मपद के अर्थ और संदेश का आठ अन्य प्रमुख विद्वानों द्वारा विश्लेषण और अनुवाद किया गया है। अब इनके द्वारा धम्मपद को लेकर अनेकों भारतीय भाषाओँ समेत विश्व की कई भाषाओं में अनुवाद करने की योजना पर कार्य चल रहा है।

गुरु ग्रन्थ साहिब - सिखों के पवित्र गुरु ग्रंथ साहिब जी की अगर चर्चा की जाये तो ब्रजभाषा, खड़ीबोली, संस्कृत, सिंधी और फारसी भाषा में यह ग्रन्थ शामिल है। इसके अतिरिक्त गुरु ग्रंथ साहिब सेवा मिशन ने गुरु ग्रंथ साहिब का हिंदी, असमिया, बंगाली, गुजराती, मराठी, कन्नड़, उड़िया, तमिल, तेलुगु, सिंधी, मलयालम और संस्कृत समेत 13 प्रमुख भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया और अब इसे अंग्रेजी चीनी के अलावा अन्य कई विदेशी भाषाओं में अनुवादित किया जाएगा।

गीता - अब सनातन धर्म की अगर बात करें तो गीता का दुनिया भर में 75 से अधिक भाषाओं में अनुवाद किया गया है। लेकिन इसमें ज्यादा प्रसन्न होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि अगर गीता का 75 से अधिक भाषाओं में अनुवाद किया गया तो इसमें इस्कान वालों की अलग गीता है गौरखपुर प्रेस की अलग। इसी तरह अन्य तमाम छोटे बड़े हिन्दू संगठन और ट्रस्टों ने अपनी-अपनी गीता छापकर खड़े है जबकि योगिराज श्रीकृष्ण जी द्वारा बोले गये श्लोक वाली शुद्ध गीता कहीं-कहीं देखने और पढने को मिलती है तो अनुवाद का सवाल ही नहीं उठता। इस कारण गीता को भाषाई युद्ध में बहुत पीछे खड़ा देखा जा रहा है।

वेद - अब अगर वैदिक धर्म, संस्कृति की आत्मा और परमात्मा की आवाज वेदों की बात करें तो विश्व के सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ को सिवाय अंग्रेजी भाषा छोड़कर अन्य सभी भारतीय भाषाओं में भी उपलब्ध नहीं है। सिर्फ हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी तथा मराठी गुजराती समेत मात्र 6 भाषाओं के भाष्य उपलब्ध हैं। एक किस्म से कहें भारतीय संविधान द्वारा प्रदत 22 राजभाषाओं में भी वेदों का भाष्य नहीं है।

अब आप स्वयं समझिये कि भाषाओं के इस युद्ध में इस कल्चर वार में या सभ्यताओं के संग्राम में हम कहाँ खड़े है? जवाब अपनी आत्मा से मिल गया होगा यानि जब तक हम भाषा के युद्ध पर ध्यान नहीं देंगे अपने वेदों को सभी भारतीय भाषाओं असमिया, बांग्ला, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्त, सिंधी, तमिल, उर्दू, तेलुगु, बोडो, डोगरी, मैथिली और संथाली समेत विश्व की प्रमुख भाषाओं में अनुवादित नहीं करेंगे तब तक न भारत आर्य बन सकता न सम्पूर्ण विश्व आर्य बन सकता है। इस विषय में आप सभी आदरणीय महानुभावों के सुझाव तो बेहद आवश्यक है ही। साथ ही जो महानुभाव इस प्रक्रिया से जुड़ना चाहते है वह कृपया अपना नाम पता जरुर भेजें अथवा सभा कार्यालय में सम्पर्क करें।

- विनय आर्य, महामन्त्री,
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रवेश सूचना

गुरु विरजानंद महाविद्यालय गुरुकुल करतारपुर, जिला -जालंधर (पंजाब) (गुरुकुल करतारपुर) में नए सत्र की प्रवेश परीक्षा 6 जुलाई से 15 जुलाई तक होंगी। जिसमें विद्यार्थी किसी भी दिन आकर अपनी प्रवेश परीक्षा दे सकते हैं जिसका परिणाम उसी दिन बता दिया जाएगा। कक्षा छठी, सातवीं, आठवीं, नवमी, 11वीं एवं बी.ए में प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी www.gurukulkartarpur.com इस वेबसाइट पर गुरुकुल की नियमावली एवं पाठ्यक्रम देख सकते हैं।

अधिक जानकारी के लिए सुखदेव राज जी अधिष्ठाता - 9888764311, संरक्षक (छात्रावास) 9882925647, 8427943262 गुरुकुल व्हाट्सएप 9988163239 से सम्पर्क करें। - **डॉ. उदयन आर्य (प्राचार्य)**

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्यसमाज की ऐतिहासिक घटनाएं

आर्यसमाज का इतिहास घटनाओं का इतिहास है। आर्यसमाज के इतिहास को बनाने में आर्यसमाजी बने व्यक्ति के साथ घटित घटनाओं का विशेष योगदान रहा है। आपके आर्य परिवार में भी किसी ऐतिहासिक घटना का होना सम्भव है।

अत: आप सभी पाठक महानुभावों से निवेदन है कि यदि आपके परिवार सदस्य के आर्य बनने अथवा किसी आर्य समाज मंदिर की स्थापना से सम्बन्धित के साथ ऐतिहासिक घटना घटित हुई हो या कोई ऐसी घटना जिसे आप आर्यसमाज के इतिहास के सम्बन्ध में ऐतिहासिक समझते हों और आपकी जानकारी में हों, हमें भेजने की कृपा करें। आपकी ऐतिहासिक घटना को आर्यसन्देश साप्ताहिक में जनसाधारण की जानकारी हेतु प्रकाशित किया जाएगा। - ***सम्पादक***

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

शोक समाचार

श्री रमशचन्द्र शास्त्री जी का निधन

आर्यसमाज डेरावाल नगर दिल्ली के धर्माचार्य एवं आर्यसमाज बिरला लाइन्स के पूर्व पुरोहित आचार्य रमेशचन्द्र शास्त्री जी का 3 जून, 2020 को राममनोहर लोहिया अस्पताल में उपचार के दौरान निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मां को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 1 जून, 2020 से रविवार 7 जून, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 4-5 जून, 2020

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 3 जून, 2020

पृष्ठ 5 का शेष

केरल में सरकार की .....

मेनका गांधी उत्तर प्रदेश से सांसद हैं जिस तरह उत्तर प्रदेश में हाथियों के मारे जाने के लिए मेनका गांधी जिम्मेदार नहीं हो सकती, उसी तरह से राहुल गांधी भी जिम्मेदार नहीं हो सकते। अब कांग्रेस प्रवक्ता को कौन समझाए कि मेनका गांधी जिम्मेदार नहीं हो सकती तो कम से कम वह हाथियों को मौत पर दुख जताते हुए उन्हें बचाने की कोशिश तो कर रही हैं। राहुल गांधी तो इस मामले में दुख तक नहीं जता सकते। मेनका गांधी बताती है कि हथनी की मौत के मामले में देश- विदेश से लगभग 20000 लोगों ने केंद्र सरकार को मेल भेजी है, केंद्र सरकार ने केरल सरकार से रिपोर्ट मांगी है।

इस सारे प्रकारण पर यही कहा जा सकता है कि आज समाज में क्रूरता इस हद तक बढ़ गई है कि मूक पशुओं के मूंह में छल से बम ठूंसे जा रहे हैं, यह कैसी विचित्र स्थिति है? इस प्रकार हाथी जैये विशालकाय पशु की नृशंस हत्या की आर्यसमाज निन्दा करता है।

केरल पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए गए अजमद अली और तमिम शेख जैसे दानवों पर सख्त से सख्त कार्यवाही करने की मांग करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी ने कहा कि आधुनिक समाज में मनुष्य के भीतर संवेदनशीलता का इतना अभाव होता जा रहा है कि जो जीव मानव समाज की रक्षा, सेवा और सहयोग करते हैं, उन्हीं को खेल-खेल में घास की जगह उनके मुख में बम देकर मार देना एक दानवता है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने केरल के पालक्कड़ जिले की साइलेंट वैली में गर्भवती हथिनी की हत्या पर दु:ख जताते हुए कहा कि भारतीय समाज में हाथी को लेकर कई प्रसिद्ध फिल्में और नाटक-नाटिकाएं भी दिखाई जाती रही हैं। हाथी मेरे साथी के ऊपर गाने भी हैं जिसके परिणाम स्वरूप हमारे यहां सर्कस आदि में भी बच्चेतथा हर आयुवर्ग के लोग गौरव महसूस करते रहे हैं। लेकिन आज के समय में शायद मनुष्य यह भूल चुका है कि हाथी जैसे शक्तिशाली जीव की समाज में कितनी उपयोगिता और आवश्यकता है, तभी तो कुछ राक्षस प्रवृत्ति के लोगों ने न केवल एक हथिनी को ही नहीं मारा अपितु उसके गर्भ में पल रहे भ्रूण को भी नष्ट करने का अपराध किया है। इस पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की मांग है कि ऐसे क्रूर राक्षसों को कठोर से कठोर दण्ड देकर समाज को स्पष्ट सन्देश देना चाहिए किए आगे से कोई ऐसी हिमाकत न करे।- ***विनय आर्य, महामन्त्री***

प्रथम पृष्ठ का शेष

कोरोना काल में शिक्षा व्यवस्था.....

लिए उन्हें ये सारी सुविधाएं उपलब्ध कराने का अतिरिक्त दबाव सहन करना ही होगा। जो गरीब लोग इस मामले में पहले पहले ही अपने आपको पिछड़ा हुआ महसूस कर रहे थे वे अब और ज्यादा आत्मग्लानि के शिकार होंगे। उनके अपने बच्चे ही उन्हें ताने दे देकर उनका बुरा हाल कर देंगे। यह कौन नहीं चाहता कि मैं अपने बच्चे को हर वह सुविधा दूं जिससे वह आगे से आगे बढ़ता जाए। लेकिन चाहना अलग बात है और कर पाने की क्षमता अलग है।

कोरोना के बढ़ते फैलाव के कारण मार्च में ही स्कूलों को बंद कर दिया था। अधिकांश स्कूलो के सत्र भी पूरे नहीं हो पाए। अनेक स्कूलों, इंजीनियरिंग कालेजों, और विश्वविद्यालयों में फाईनल परीक्षाएं भी भी नहीं हो पाई। यहां तक कि सीबीएसइ जैसा बोर्ड भी अपनी परीक्षाएं पूरी नहीं करा पाया। लाकडाउन के चलते शिक्षा और परीक्षा को लेकर नई घोषणओं में कहा गया है कि अगर सब कुछ ठीक ठीक रहा तो जुलाई में स्कूलों को खोलने पर विचार किया जा सकता है। 10 वीं, 12 वीं की जो परीक्षाएं शेष हैं उन्हें भी जुलाई में कराने की बात कही गई है। लेकिन कोरोना के कारण पूरे देश के स्कूलों में बच्चों की कक्षाएं ठप्प पड़ी हैं, सभी सकूलों के बच्चों को आनलाइन क्लास में पढ़ पाना संभव नहीं है। नेसनल सैंपल सर्वे आफिस के आंकडों के अनुसार केवल 23.8 प्रतिशत भारतीय घरों में इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध हैं। जबकि ग्रामीण इलाके इस सुविधा में बहुत पीछे हैं। शहरी घरों में यह सुविधा 42 प्रतिशत है लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में 14.9 ही है। वहां केवल 8 प्रतिशत घर ही ऐसे हैं जहां कंप्यूटर और इंटरनेट दोनों चीजें उपलब्ध हैं। देश में मोबाइल की उपलब्धता 78 प्रतिशत आंकी गई है, पर इसमें भी शहरी और ग्रामीण इलाकों में भारी अंतर है। इसलिए सबको शिक्षा कैसे मिले, सब वर्चुवल क्लास में कैसे पढ़ें, सबका जीवन विकास कैसे संभव हो, सब आगे कैसे बढ़ें, ये तमाम प्रश्न समाज के सामने हैं? इनका समाधान कैसे हो? प्राइवेट स्कूल वाले तो फिर भी वर्चुवल कक्षाएं चला सकते हैं लेकिन सरकारी स्कूल और उनमें पढ़ने वाले बच्चे क्या करें?

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह